श्रुति-सुगम

योगी नरहरिनाथः

शान्ताकारं शिखरशयनं योगिवेषं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिक सदृशं चन्द्रचूडं शुभाङ्गम् ।
गौरीकान्तं त्रिविधनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्देशम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

प्रकाशक : भद्रेश्वर विद्यापीठ, जो ध पु र

प्रयागराज - महाकुम्भ पर्व के उपलक्ष में
शाके १९१०, संवत् २०४५

।। ॐ 卐 गौः श्रीः ।।

श्रीगणेशाय नमः

गजाननं भूतगणादिसेवितं,
कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ।।

शिवस्य प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं,
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदा भयहस्तमीशं,
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।१।।
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्द्ध देहं,
सर्गस्थिति प्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं,
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।२।।
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं,
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।
नामादि भेदरहितं षडभावशून्यं,
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।३।।
प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य,
श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति ।
ते दुःखजातं बहुजन्मसञ्चितं,
हित्वा पदंयान्ति तदेव शम्भोः ।।४।।

श्रीपशुपतिनाथ पुस्तकालयः
संवत् २०३८, २०४४ कोटिहोमस्थल देवघाटधामः नेपाल

ॐ 卐 गौः श्रीः

ॐ = ईश्वर = तस्यवाचक प्रणव ।

卐 = (स्वस्ति) = कल्याण ।

गौः = अहिंसाप्रतीक ।

श्रीः = सुख समृद्धि ।

१. **आत्मा खलु विश्वमूलम् !**
आत्मा ही विश्वका मूल है ।

२. **वेदोऽखिलो धर्ममूलम् !**
वेद ही अखिल धर्मोंका मूल है ।

३. **कृण्वन्तो विश्वमार्यम् !**
ऋषि मुनि लोग समग्र विश्वको आर्य संस्कृतिसे संस्कृत करते थे ।

४. **ईशावास्यमिदं सर्वम् !**
यह सारा संसार ईश्वरका आवास है ।

५. **सर्वं खल्विदं ब्रह्म !**

यह समग्र विश्व ब्रह्मका साकार स्वरूप है।

६. **अहम् ब्रह्मास्मि !**

हम सब प्राणी ब्रह्म ही हैं। सारे जीव शिवके ही अंश हैं।

७. **तत् त्वमसि !**

हे जीव! वह ब्रह्म तुम हो। तुम वही ब्रह्म हो।

८. **खम् ब्रह्म !**

ब्रह्म आकाश स्वरूप एव सुख स्वरूप है।

९. **प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म !**

उत्कृष्ट ज्ञान एवं आनन्दमय ब्रह्म है।

१०. **स्वाध्यायो वेद !**

स्वाध्याय वेदका नाम है।

११. **मातृदेवो भव !**

माताको देवता जानो, देवता मानो।

१२. **पितृदेवो भव !**

पिता को देवता जानो, देवता मानो।

१३. **आचार्यदेवो भव !**

गुरुको देवता जानो, देवता मानो।

१४. **अतिथिदेवो भव !**

अतिथिको देवता जानो, देवता मानो ।

१५. **श्रद्धया देयम् !**

श्रद्धासे लेना देना चाहिये ।

१६. **संविदा देयम् !**

विवेक विचारसे देश काल पात्रमें दान देना चाहिये ।

१७ **यज्ञो वै शिवः !**

यज्ञ शिवका स्वरूप है ।

१८. **यज्ञो वै विष्णुः !**

यज्ञ विष्णुका स्वरूप है ।

१९. **स्वागतम् !**

आपका आगमन सुखद हो, सुखी होकर जाइये ।

२०. **अहरहः सन्ध्यामुपासीत !**

प्रातः सायं मध्याह्न त्रिकाल सन्ध्यामें गायत्री जप, देवता पूजन, वन्दन आदि शुभ कर्म करना चाहिये ।

२१. **सत्यं वद !**

मनसा वाचा, कर्मणा सत्य बोलो ।

२२. **धर्मं चर !**
मनसा, वाचा, कर्मणा धर्म करो ।

२३. **स्वाध्यायान्मा प्रमद !**
स्वाध्यायसे प्रमाद मत करो ।

२४. **वीरभोग्या वसुन्धरा !**
शूर वीर लोग ही देशकी रक्षा करते हैं ।

२५. **रत्नगर्भा वसुन्धरा !**
धरतीमाताके गर्भमें समस्त रत्न हैं ।

२६. **वाचं धेनुमुपासीत !**
वेदवाणी रूपिणी कामधेनु गौ की सेवा सबको करनी चाहिये ।

२७. **यज्ञाद् भवति पर्जन्यः !**
यज्ञसे सभी प्रजाका कल्याणकारी मेघ वरसता है ।

२८. **काले वर्षतु पर्जन्यः !**
सर्वत्र यज्ञ हो, समय-समय पर सुवृष्टि हो, समस्त प्रजाका हित हो ।

२९. **बहुधान्य वसुन्धरा !**
नदी मातृक देशमें सभी प्रकारके अन्न आदि होते हैं ।

३०. **पृथिवी सस्य शालिनी !**

राजन्वती पृथिवी सभी प्रकारके तृण, लता, गुल्म वनस्पति, खेती सुशोभित होती है।

३१. **यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन !**

वैदिक कालमें देवी देवता ऋषि मुनि जनोंने मिलकर यजनीय भगवान् यज्ञपुरुषका यज्ञ-द्वारा यजन किया, वे ही धर्म प्रथम थे।

३२. **ॐ द्यौर्मे पिता। माता मे पृथिवी।**
पुत्रोऽहं पृथिव्याः। नमो मात्रे पृथिव्यै।

ॐकार स्वरूप आकाश मेरे पिता हैं। पृथ्वी मेरी माता हैं। मैं पृथ्वीका (की) पुत्र (पुत्री) हूं। पृथ्वी मताको नमस्कार है। वन्दे मातरम् !

३३. **ॐ ऊर्जन्दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु !**

उर्जामय दूध प्रशस्त प्रदान करनेवाली वेद-वाणी रूपिणी कामधेनु गौमाता हमारे शिर पर सदा रहे। हमारी स्तुतिसे प्रसन्न होकर हमें वरदान दें।

३४. **सत्यं शिवं सुन्दरम् !**

सत्य ही शिव है, शिव ही सुन्दर है।

३५. **शिवोऽहम् !**

हम सव जीव शिव ही हैं।

३६. **ॐ नमः शिवाय !**

शिवको नमस्कार है।

३७. **ॐ नमः पार्वत्यै !**

पार्वतीको नमस्कार है।

३८. **ॐ नमो गणेशाय !**

गणेश को नमस्कार है।

३९. **ॐ नमः कुमाराय !**

कुमारको नमस्कार है।

४०. **ॐ नमो नन्दिने !**

नन्दिको नमस्कार है।

४१. **ॐ नमः शिवपरीवाराय !**

शिवपरिवारको नमस्कार है।

४२. **ॐ नमो गुरवे !**

गुरुको नमस्कार है।

४३. **ॐ नमो हनुमते !**

हनुमानको नमस्कार है।

४४. **ॐ नमो विष्णवे !**

विष्णु को नमस्कार है।

४५. ॐ नमः कृष्णाय !
कृष्णको नमस्कार है ।
४६. ॐ नमो राधायै !
राधाको नमस्कार है ।
४७ ॐ नमो रामाय !
रामको नमस्कार है ।
४८. ॐ नमः सितायै !
सिताको नमस्कार है ।
४९ ॐ नमः समस्तदेवताभ्यः !
समस्त देवी देवताओं को नमस्कार है ।
५०. ॐ दुर्गायै नमः !
दुर्गादेवीको नमस्कार है ।
५१. ॐ वन्दे मातरम् !
माता की वन्दना करते हैं ।
५२. ॐ वन्दे पितरम् !
पिताको वन्दना करते हैं ।
५३. ॐ वन्दे गुरुम् !
गुरुकी वन्दना करते हैं ।
५४. ॐ वन्दे देवताम् !
देवताकी वन्दना करते हैं ।

५५. ॐ गोमातरम् वन्दे !
गौमाताकी वन्दना करते हैं ।

५६. ॐ अहं राष्ट्री सङ्गमनी !
जनशक्तिसे राष्ट्रका सङ्गठन होता है ।

५७. ॐ वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ।
हामीहरु सदा जागरौं, राष्ट्रमा राष्ट्रभक्तिले ।
अगुवा हौं हित गरौं, सबैको सङ्घशक्तिले ।।
राष्ट्रमें हम जागते हुए सबके आगे चलकर हित करें ।

५८. धर्मो रक्षति रक्षितः !
धर्म रक्षा करनेवालेकी रक्षा करता है ।

५९. धर्मेण हन्यते व्याधिः !
धर्मसे रोगका हरण होता है ।

६०. धर्मेण लभ्यते सुखम् !
धर्मसे सुख मिलता है ।

६१. धर्मेण प्राप्यते मोक्षः !
धर्मसे मुक्ति मिलती है ।

६२. धारणं पोषणं धर्मः !
धारण और पोषणको धर्म कहते हैं ।

६३. **धर्म एकोऽनुगच्छति !**
एक धर्म ही अन्तमें साथ जाता है ।

६४. **स्वधर्मे निधनं श्रेयः !**
अपने धर्ममें रहकर मरना भी श्रेयस्कर है ।

६५. **परधर्मो भयावहः !**
पराया धर्म भयानक है ।

६६. **धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम् !**
धर्ममें सब प्रतिष्ठित हैं ।

६७. **धर्मो धार्यते प्रजाः !**
धर्म प्रजाका धारण करता है ।

६८. **धर्मेण धार्यते पृथ्वी !**
धर्मसे पृथ्वी भी आधारित है ।

६९. **धर्माधारं जगत् सर्वम् !**
सारा संसार धर्मके आधारमें है ।

७०. **धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा !**
धर्म समस्त जगत्की प्रतिष्ठा है ।

७१. **यतोऽभ्युदय-निश्रेयस-सिद्धिः स धर्मः !**
जिससे इस लोकमें अभ्युदय हो और परलोकमें निश्रेयस कल्याण हो, उसका नाम धर्म है ।

७२. **वस्तु-स्वभावो धर्मः !**
प्रत्येक वस्तुका स्वभाव ही उसका धर्म है ।

७३. **चतुष्पात् सकलो धर्मः !**
चार पाँववाला सकल धर्म है ।

७४ **धर्म रूपो वृषः स्वयम् !**
धर्मरूपी वृषभ स्वय नन्दी है ।

७५. **दया दानं तपः सत्यं चतुष्पाद् धर्म उच्यते ।**

धर्मके चार पाद दया दान तप और सत्य हैं ।

७६. **ॐ वाचं धेनुमुपासीत !**
तस्याश्चत्वारः स्तनाः । स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः । स्वधाकारस्तस्यै द्वौ स्तनौ देवाऽउपजीवन्ति । स्वाहाकारञ्च वषट्कारञ्च हन्तकारं मनुष्याः । स्वधाकारं पितरस्तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः ।। वाणी रूपिणी कामधेनु गाइको उपासना गर्नुपर्छ तेस श्रुति - रूपा - वेदवाणीरूपा गाइका चार थुन छन्, स्वाहाकार, वषट्कार, हन्तकार र स्वधाकार । तिन मध्ये दुइटा थुनको दूद देवताले खान्छन्, स्वाहाकार र

वषट्कार को। हन्तकारको दुद मानिसले खान्छन्, स्वधाकार चौथा थुनको दुद पितृहरुले खान्छन्, प्राणवायुवाणी गाइको साँडे हो र मन वाच्छो हो। अर्थात्-वेद पढनु पर्छ। स्वाहा वषट् भनेर, देवतालाइ हव्य दिनु पर्छ, स्वधा भनेर, पितरलाइ कव्य दिनु पर्छ दयाभाव राखेर हन्त! कठैवरा! भनेर मानवलाई अन्न पानी आदि समुचित माग दिनु पर्छ। प्राणवायुको वास-स्थान हृदयमा छ, हृदयबाट उच्चारण गरेको वेदवाणी सफल हुन्छ। वाच्छो नलाइ गाइले दुद दिन्नन्। मन लायेर वेद पढनु पर्छ मनोयोग विना वोलेको बचन वौलाहा को प्रलाप हुन्छ। सवै काम कुरा मन लायेर गर्नु वाञ्छनीय छ।

ईश्वरस्वरूप ॐ कारका विस्तार वेदवाणी रूपिणी कामधेनु गौकी उपासना सेवा सबको करनी चाहिये। इनकामधेनु माताके चार थन हैं:--स्वाहाकार १. वषट्कार २. हन्तकार ३. स्वधाकार ४. इन गौमाताके दो थन का दूध समस्त देवी देवता पीते हैं। स्वाहाकार और वषट्कारका। हन्तकार

तीसरे थनका दूध समस्त मनुष्य पीते हैं, स्वधाकार चौथे थनका दूध समस्त पितर पीते हैं। इन वेदवाणी कामधेनु गौमाताका वृषभ प्राण है, मन वछडा है। अर्थात् मन लगाकर वेद पढना चाहिये।

७७. **समत्वं योग उच्यते !**

प्राण - अपानका, मन - पवनका, इड़ा-पिङ्गलाका, चन्द्र - सूर्यका, शिव - जीवका, अणु - महत्का, छोटे-वडेका, गङ्गा-यमुना आदिका समत्व भी योग है।

७८. **योगः कर्मसु कौशलम् !**

संसारके समस्त कर्मोंमें कौशल प्राप्त करना भी याग है।

७९. **योगस्थः कुरु कर्माणि !**

योगस्थ होकर समग्र सत्कर्म करो।

८०. **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, समवेता युयुत्सवः।**
मामकाः पाण्डवाश्चैव, किमकुर्वत सञ्जय ।।

धर्मके क्षेत्र राजा कुरुके क्षेत्रमें जुटे हुये कौरव पाण्डवोंने क्या किया ? हे सञ्जय ! सारा वृत्त मुझे वताओ।

८१. **यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।**
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, जहाँ धनुर्धर पार्थ हैं, वहीं पर श्री, विजय, ऐश्वर्य और ध्रुव नीति हैं, हे राजन् ! धृष्टराष्ट्र !! मेरी मति तो यही कहती है ।

८२. **आरोग्यं भास्करादिच्छेत् !**
सूर्यसे आरोग्यके इच्छा करें ।

८३. **ज्योतिषा बाधते तमः !**
ज्योतिसे अन्धकार हटता है ।

८४. **ॐ अध्यात्मविद्या विद्यानाम् !**
समस्त विद्याओंमें अध्यात्मविद्या उत्तम है ।

८५. **विद्ययाऽमृतमश्नुते !**
विद्यासे अमृत मिलता है ।

८६. **विद्या परा देवता !**
विद्या ही परम देवता है ।

८७. **विद्या गुरूणां गुरुः !**
विद्या गुरुजनोंकी भी गुरु है ।

८८. **विद्या सर्वत्र पूज्यते !**
विद्याकी पूजा सर्वत्र होती है ।

८९. विद्वान् सर्वत्र पूज्यते !
विद्वान्की पूजा सर्वत्र होती है।

९०. गुणेषु क्रियतां यत्नः पदं सर्वत्र लभ्यते !
गुणोंके उपार्जनमें यत्न करना चाहिये, पद सर्वत्र मिलता है।

९१. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
पूजाका स्थान गुण हैं, गुणीजनोंमें गुणकी ही पूजा होती है। अवस्था और भेषकी पूजा नहीं होती।

९२. विद्या धनं सर्वधनप्रधानम् !
विद्याका धन सभी धनोंमें प्रधान है।

९३. विद्याऽतिगुप्तं धनम् !
विद्या अति गुप्त धन है।

९४. सन्तोषः परमं सुखम् !
सन्तोष ही परम सुख है।

९५. नास्ति शान्तिसमा सखी !
शान्ति के समान सखी नहीं है।

९६. नास्ति चिन्तासमा चिता !
चिन्ताके समान दाहक चिता भी नहीं है।

९७. नास्ति विद्यासमो बन्धु !
विद्याके समान कोई बन्धु नहीं है ।

९८. नास्ति मातृसमा गतिः !
माताके समान परमगति नहीं है ।

९९. नास्ति पृथ्वीसमा क्षमा !
पृथ्वीके समान क्षमाशील कोई नहीं है ।

१००. नास्ति रोगसमः शत्रुः !
रोगके समान शत्रु कोई नहीं है ।

१०१. न बुभक्षासमः शोषः !
भूखके समान शोषक कोई नहीं है ।

१०२. न तितिक्षासमस्ति साधनम् !
तितिक्षाके समान कोई साधान नहीं है ।

१०३. स्वच्छता गृहभूषणम् !
स्वच्छता ही घर का भूषण है ।

१०४. नभोभूषा पूषा !
आकाश का भूषण सूर्य है ।

१०५. सभाभूषा विद्वान्
सभा का भूषण विद्यावान् है ।

१०६. **बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ?**
जिसको बुद्धि है, उसीका बल है, निर्बुद्धिका काहाँ बल ?

१०७. **बलमुपास्व । बलेन लोकस्तिष्ठति !**
बलकी उपासना करो । बलसे लोकको स्थिति रिति रहती है ।

१०८. **बलेष्वात्मबलं मुख्यम् !**
सभी बलोंमें आत्मबल मुख्य है ।

१०९. **मैत्र्यादिषु बलानि !**
मैत्री करुणा, मुदिता उपेक्षामें सभी प्रकार के बल सन्निहित रहते हैं ।

११०. **बलेषु हस्तिबलादीनि !**
सैन्य बलोंमें हस्ती: अश्व रथ पदाति चतुरङ्गिणी सेनाका बल राष्ट्रनिर्माण तथा राष्ट्ररक्षा के लिये अनिवार्य है ।

१११. **नास्ति योगसमं बलम् !**
अष्टाङ्ग योगबलसे सप्ताङ्ग राष्ट्रको सर्वतो भावेन रक्षा होती हैं । योगके समान अन्य बल नहीं है ।

११२. **बलं बलवतां चाहम् !**
बलवानोंमें बल ईश्वरका प्रतीक है ।

११३. उद्योगः सर्वसाधनम् !
उद्योग सबका साधन है ।

११४. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः !
उद्योगी पुरुष (मनुष्य मात्र) सिंह के पास लक्ष्मी स्वयं आती है ।

११५. उद्योगे नास्ति दारिद्र्यम् !
उद्योग में दरिद्रता नहीं रहती ।

११६. उद्योगः खलु कर्तव्यः !
सबको उद्योग अवश्य करना चाहिये ।

११७. नास्त्युद्यमसमो बन्धुः !
उद्यम के समान कोई बन्धु नहीं है ।

११८. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः !
सभी कार्य उद्यम से ही सिद्ध होते हैं, न कि केवल मनोरथ से ।

११९. उद्योग-कल्पवृक्षस्य फलमर्थ-चतुष्टयम् !
उद्योगरूपी कल्पवृक्ष के मधुर फल चारों पुरुषार्थ हैं । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

१२०. कामधेनुः कल्पवृक्षश्चिन्तामणिरथोद्यमः !
उद्योग समस्त कामनापूर्ण करनेवाली कामधेनु गौ है, समग्र कल्पनाओंको सफल करने-

वाला कल्पवृक्ष है, सभी चिन्ताओंको परिपूर्ण करनेवाला चिन्तामणि है।

१२१. **असाध्यं नास्ति चोद्यमैः !**
संसारमें उद्योगसे असाध्य कोई वस्तु नहीं है।

१२२. **उद्योगो योग उच्यते !**
उद्योग ही योग है।

१२३. **निर्वाणोद्योग-योगः स्यात् !**
निर्वाणका उद्योग भी योग है।

१२४. **अस्वच्छता रोगकरी प्रसिद्धा,**
अरोगता स्वच्छतया विभाति ।
विसूचिकाद्याः सकलाश्च रोगा,
विशुद्धवातावरणे न यान्ति ।।
स्वच्छता न रखने पर अनेक प्रकारके रोग फैलते हैं और स्वच्छतासे स्वास्थ्य रहता है। इस बातको सबलोग जानते हैं। विशुद्ध वातावरणमें हैजा आदि कोई रोग नहीं जाते।

१२५. **विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः !**
विवेकसे भ्रष्टोंका पतन सौ सौ प्रकारसे होता है।

१२६. धन्यो गृहस्थाश्रमः !
चारों आश्रमोंका आधार होने से गृहस्थाश्रम सब प्रकार धन्य है।

१२७. न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते !
गृहको गृह नहीं कहते, गृहलक्ष्मीको गृह कहते हैं।

१२८. विरक्तस्यचित्तस्य गृहं तपोवनम् !
जिसका चित्त विरक्त है, उसके लिये घर भी तपोवन है।

१२९. कुशासनस्थोऽपि सुशासनस्थः !
कुश के आसन पर बैठकर भी सुशासन चलाया जा सकता है।

१३०. यादृशं भुज्यते चान्नं तादृशं जायते मनः !
जैसा अन्न खाया जाता है, वैसा मन बनता है।

१३१: यदन्नो मनुजो लोके तदन्नास्तस्य देवताः !
जो अन्न मनुष्य स्वयं खाता है, वही अन्न अपने देवताओं को देता है।

१३२. मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः !
मन ही मनुष्य का बन्धन का कारण है, मन ही मोक्ष का कारण है।

१३३. जितं जगत् तेन मानो हि येन !
जिसने मन जिता, उसने जगत् को जिता ।

१३४: वेदः शिवः शिवो वेदः !
वेद शिव हैं, शिव वेद हैं, शिव वेद में भेद नहीं है ।

१३५. वेदो नारायणः स्मृतः !
वेद नारायण हैं, नारायण वेद हैं ।

१३६. वेदो ब्रह्म सनातनम् !
वेद सनातन ब्रह्म हैं ।

१३७. सर्वं वेदात् प्रसिध्यति !
वेदसे सबके सब कार्य सिद्ध होते हैं, वेद-शब्दसे ही सृष्टि होती है ।

१३८. वेदोऽखिलो धर्ममूलम् !
अखिल वेद अखिल धर्मका मूल है ।

१३९. प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते ।
एतं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता ।।
प्रत्यक्ष प्रमाण अथवा अनुमान प्रमाणसे जो वस्तु नहीं जानी जाती उसको भी जिससे जानते हैं, वही विद्या वेद है ।

१४०. यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे नमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ।।
जिसके विश्वास वेद हैं, वेदोंसे जिसने अखिल जगत्की सृष्टि की और वैदिक विधानसे ही जो जगत्का प्रतिपालन करता है, उस समस्त विद्याकी तीर्थ महेश्वर शिव की हम वन्दना करते हैं ।

१४१. ज्ञानं विद्या च वेदश्च, त्रयः पर्याय-वाचकाः !
ज्ञान, विद्या और वेद तीनों शब्द पर्याय-वाचक हैं । तीनोंका एक ही अर्थ होता है ।

१४२. सर्वं वेदविदर्हति !
वेदवेत्ता सबका सुपात्र होता है और संसारमें सब कुछ कर सकता है ।

१४३. सर्वज्ञो वेदवेत्ता स्यात् !
वेद को जानने वाला सब कुछ जानता है ।

१४४. वेदे यन्नास्ति तन्नास्ति !
वेद में जो नहीं है, वह कहीं नहीं है ।

१४५. वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः !
वेदविहित धर्म है, वेद से निषिद्ध अधर्म है ।

१४६ **वेदमूलाः प्रवृत्तयः !**
संसार की सारी प्रवृत्तियां वेदमूलक हैं।

१४७. **वेदो नित्यमधीयताम् !**
वेद सबको नित्य पढना चाहिये।

१४८. **द्विजसेवितशाखस्य श्रुतिकल्पतरोः फलम्।**
शमनं भवतापस्य योगं भजत सत्तमाः॥
शुकपिकादि द्विजां,जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यादि द्विजो द्वारा नित्य सेवित असंख्य शाखा तुल्य-शाखा वाले वेदरूपी कल्पवृक्ष का मधुरफल योग है। योग का सेवन सबको सदा करना चाहिये। **नास्ति योगसमं बलम् !** (योग के समान कोई बल नहीं है)

१४९. **भेदशिक्षां परित्यज्य, वेदशिक्षा विधीयताम्।**
भेदशिक्षा को त्यागकर, वेदशिक्षा चलानी चाहिये।

१५०. **सत्सङ्गमङ्गलमनन्तफलं प्रसिद्धम्।**
सत्सङ्ग मङ्गल अनन्तफल देता है, यह बात प्रसिद्ध है।

१५१: **सत्सङ्गतिः कथय किन्न करोति पुंसाम् ?**
सज्जनों की सङ्गति कहो क्या नहीं करती ?

अर्थात् मनुष्यमात्र की सकल कामनायें सिद्ध करती है।

१५२ सङ्गः सतां किमु न मङ्गलमातनोति ?
सज्जनों का सङ्ग कौनसा मङ्गल नहीं करता ? सब करता है।

१५३. सत्सङ्गजानि निधनान्यपि तारयन्ति !
सत्सङ्गसे होनेवाले निधन भी सबको तार देते हैं।

१५४. इतः स्वाहा स्वाहा हवनमितरत्रार्चनविधिः
श्रुतिस्मृत्यादीनां प्रवचनमितः स्वागतमितः।
इतो योगाभ्यासः सकलविधरोगापनयनः
सदुद्योगाः सर्वे भविक-भवने-कोटिहवने ॥
विश्वकल्याण, विश्वशान्ति एवं राष्ट्रकल्याण राष्ट्रशान्तिके लिये किये जानेवाले कल्याण-मय कोटिहोम आदि यज्ञोंमें, एक ओर स्वाहा स्वाहा कहकर वैदिक हवन होता है, एक ओर समस्त देवी देवताओंका तथा गौमाताका पूजन होता है, एक ओर श्रुति स्मृति प्रभृति सकल शास्त्रोंका प्रवचन होता है, एक ओर स्वागतसमिति 'स्वागतम् ? स्वस्ति ?' कहकर अतिथि अभ्यागतोंका स्वागत सत्कार भोजन

जलपान आवास आदिका प्रबन्ध करती है। एक ओर अष्टाङ्गयोगका क्रियाभ्यास किया जाता है, एक ओर अष्टाङ्ग आयुर्वेदकी स्वास्थ्यसेवा होती है एवं सभी प्रकारके विकासकारी उद्योगोंकी क्रियाशील शिक्षा दीक्षा होती है। सभी प्रकारसे ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों काण्ड वेदकी विश्वकल्याणी शिक्षा होती है। अतः कोटिहोम विश्वकल्याणकारी है।

१५५. स्वयं दत्तं सुधातुल्यं याचितं जलमुच्यते।
हठान्नीतं रक्ततुल्यं सा भिक्षा नैवभक्ष्यताम्॥
आप दिया सोदूध बराबर, माग लिया तो पानी।
कलपाकल्पी रक्त बराबर, सो भिक्षा नहीं खानी॥

१५६. यश्चित्त-सन्ततलयः स लयः प्रदिष्टो
यस्तु प्रभञ्जन-विधानरतो हठः सः।
यो मन्त्र-मूर्ति-वशगः स तु मन्त्रयोगो
यश्चित्तवृत्ति-रहितः स हि राजयोगः॥
जो चित्त को सतत लय करने की शैली है। वही लय योग है, जो दश वायु का रेचक पूरक कुम्भक केवल आदि विधान है, वही हठयोग है। जो ॐ मन्त्र का जप और मन्त्र के वाच्य

ईश्वर का ध्यान करने की पद्धति है, वही मन्त्र योग है और चित की पाँचों वृत्तियों से रहित है, वही राजयोग या अमनस्क महा-योग है। यह अष्टाङ्गयोग का संक्षेप चुतरङ्ग योग है।

१५७. आलेख्यविशेष इव गजवृषभयोर्द्वयोः प्रतिभासम्
एकस्मिन्नेवार्थे शिवशक्ति-विभाग-कल्पनां कुर्मः ॥

जैसे चित्र विशेष में हाथी तथा वृषभ का आभास होता है, वैसे ही एक ही शिवतत्त्व में शिव-शक्ति के विभाग की कल्पना करते हैं। एक ज्योर्मय मूर्तिमें आर्धगौरीश्वर की धारणा की जाती है। वस्तुतत्त्व एक है।

१५८. शिवस्याभ्यन्तरे शक्तिः शक्तेरभ्यन्तरे शिवः।
अन्तरं नैव जानीयाच्चन्द्रचन्द्रिकयोरिव ॥

शिवके भीतर शक्ति पार्वती हैं, शक्तिके भीतर शिव हैं, शिव-शक्तिमें अन्तर नहीं है: जैसे चन्द्रमा और चाँदनीमें भेद नहीं है।

१५९. वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ-प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ ॥

वाणी और अर्थके समान परस्पर मिले हुये, जगत्के माता पिता पार्वती तथा परमेश्वर शिवकी वन्दना हम वेदादि वाणीका अर्थ जाननेके लिये नित्य करते हैं।

१६०. **हन्त मुखं प्रतिबिम्बतु प्रतिबिम्बयतु तथा हृदपि दर्पणः ।**
दर्पणः पुनर्यस्मिन्प्रतिबिम्बति सोऽपि ज्ञातव्यः॥
अहा ! दर्पण परमुख प्रतिबिम्बित हो, तथा मुखको दर्पण भी प्रतिबिम्बित करे, पुनश्चं दर्पण जिसमें प्रतिबिम्बित होता है उसको भी जानना चाहिये, अर्थात् जिसमें जगत् प्रतिबिम्बित होता है उसको भी जानना चाहिये ।

१६१. **तस्मै नमः कर्मणे !**
उस कर्मको नमस्कार है ।

१६२. **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः !**
सर्वदा सर्वथा सर्वत्र सभी सत्कर्म करते हुये ही सौ सौ वर्ष पर्यन्त स्वस्थ शरीरसे जीनेकी इच्छा करें ।

१६३. **कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।**
जनक आदि राजर्षिगण, सनकादि देवर्षिगण, वशिष्ठादि ब्रह्मर्षिगण, श्रवणादि वैश्यर्षिगण, वाल्मीक्यादि शूद्रर्षिगण, भी सत्कर्मसे ही जीवन्मुक्ति जैसी सिद्धिको प्राप्त कर सबके आस्थाके पात्र बने है । अतः सबको सत्कर्म अवश्यमेव करना चाहिये ।

१६४. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मानव को कर्म में ही अधिकार है, फलों में कदाचित् नहीं। फलाध्यक्ष कर्मसाक्षी ईश्वर निष्पक्षता से अवश्य फल देता है।

१६५. नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।
कोई भी प्राकृतिक जीव कभी भी एक क्षण भी निष्क्रिय नहीं रह सकता, क्योंकि प्रकृति के तीनों गुणों से सर्वदा निरन्तर किसी न किसी काम में विवश होकर लगा ही रहता है।

१६६. किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
क्या कर्म है? क्या अकर्म है? इस विषय में क्रान्तदर्शी कविलोग भी मोहित हैं।

१६७, प्राप्येमां कर्मभूमिं न चरति मनुजो यस्तयो मन्दभाग्यः।
इस कर्मभूमि में सत्कर्म करने को मानवचोला प्राप्त कर भी जो शुभ कर्म नहीं करता, वह मन्द भाग्य है।

१६८. कर्मज्यायो ह्यकर्मणः।
अकर्म से कर्म जेठा और उत्तम है। सबको सदाकर्म करना ही चाहिये।

१६९ शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोपि किल्बिषम् ।
ब्रह्मज्ञानी भी केवल शरीर यात्रा का निष्काम कर्म करता हुआ पाप भागी नहीं होता ।

१७०. न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
कर्मों को प्रारम्भ करने से ही कोई भी मनुष्य नैष्कर्म्य सिद्धि को नहीं पा सकता । आलसी दम्भी हो सकता है । अतः निष्काम कर्म सबको सदा करना ही चाहिये ।

१७१. कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः !
स बुद्धिमान् मनुष्येषु सयुक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।।
जो कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखता है, वही मानव सबमें बुद्धिमान् है, वही जीव शिव से युक्त है और समस्त सत्कर्म करता है अर्थात् कर्म अकर्म आदि का तत्त्ववेत्ता है ।

१७२. कर्माकर्म विकर्मेति त्रिविधा कर्मचोदना ।
कर्मप्रधान विश्व में कर्म अकर्म विकर्म तीन प्रकार का कर्म विधान हैं । तीनों का तत्त्व सबको जानना चाहिये ।

१७३. योगः कर्मसु कौशलम् !
समस्त कर्मों में कौशल प्राप्त करना ही योगहै ।

१७४. चित्रं न लिखति चित्रं चित्रकरो लिखति पश्यत चित्रम् ।
तद् भणत कुत्र योग्या कर्तुं द्वयोरपि देवता-बुद्धिः ? ।।

चित्र चित्र को नहीं लिखता, किन्तु चित्रकार चित्र को लिखता है । तब कहो ? इन दोनों में से किसमें देवता की भावना की जाय ?

१७५. ॐ कारप्रौढमूलः क्रमपद-सहितच्छन्द-विस्तीर्णशाखः, ऋक्पत्रः सामपुष्पो यजुरधिकफलोऽथर्वगन्धन्दधानः ।
यज्ञच्छायासमेतो द्विजमधुपगणैः सेव्यमान प्रभाते, मध्ये सायं त्रिकालं सुचरितचरितः पातु वो वेदवृक्षः ।।

ईश्वरका प्यारा नाम ॐ कार जिसका प्रौढ दृढतम मूल है । क्रम पद सहित छन्द और असंख्य शाखा जिसकी विस्तीर्ण हैं । ऋग्वेदकी ऋचायें जिसके पत्ते हैं । सामवेदके गान जिसके सुन्दर फूल हैं । यजुर्वेदकी कण्डिकायें जिसके मधुर फल हैं । अथर्ववेदके मन्त्र जिसका मनोहर गन्ध है । कोटिहोमादि यज्ञ जिसकी घनी छाया है । जो ब्राह्मण

क्षत्रिय वैश्य आदि द्विजरूपी मधुकरोंसे त्रिकालसन्ध्या प्रातः मध्याह्न सायं सेवित है। समस्त जनताका चरित्र ही जिसके वल्कल पलास सार आदि अङ्ग प्रत्यङ्ग हैं। ऐसा वेदरूपी कल्पवृक्ष हम सबकी साथमें रक्षा करे।

वेदका सूत्रमात्र परिचय यह है:—

अष्टौ विकृतयः- पदपाठः। क्रमपाठः। घनपाठः। जटापाठः। वल्लीपाठः। संहितापाठः। मालापाठः। मन्त्रपाठः। चतुर्वेदलक्षणम्- यथार्थवशेन पादव्यवस्था सा ऋक्। गीतिषु सामाख्या। शेषे यजुः। समाहारोऽथर्वी। एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्। पञ्चाशच्छाखा अथर्वणः। एकशतमध्वर्युशाखाः। सहस्रवर्त्मा सामवेदः। पिण्डीभूताः ११७२ शाखा। तद्वत्प्रातिशाख्यानि। तद्वदुपनिषदः। उपवेदाः- ऋच आयुर्वेदः। यजुषो धनुर्वेदः साम्नो गन्धर्ववेदः। अथर्वणोऽर्थशास्त्र विश्वकर्मशिल्प वेदः। ब्राह्मणानि ऋच ऐतरेयब्राह्मणम्। यजुषः शतपथब्राह्मणम्। साम्नस्ताण्डचार्षेयादीनी ब्राह्मणान्यष्टौ। अथर्वणो गोपथ-

ब्राह्मणम् । आरण्यकानि बृहदारण्यक-तैत्तिरीयैतरेयच्छान्दोग्यादीनि पञ्चविंशतिः समुपलभ्यन्ते सम्प्रति । गृह्यसूत्राणि- पास्कर-कात्यायन-सांख्यायनाश्वलायन-शुल्व-गोभिल-प्रमुखानि । वेदाङ्गानि शिक्षा, कल्पो, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दो, ज्यौतिषम् । गौतमस्य कणादस्य कपिलस्य पतञ्जलेः । व्यासस्य जैमिनेश्चापि दर्शनानि षडेव हि । बौद्ध जैन चार्वाक वैभाषिक माध्यमिक सैत्रान्तिक भौतिक आदि दर्शन ।

१७६. देवो भूत्वा देवान् यजेत् ।
देवता होकर देवताओंका यजनदेवतापूजा-सत्सङ्गदानादि करना चाहिये ।

१७७. ॐनमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्चवो नमो नमः ।
सभाओंको नमस्कार है। सभापतियोंको नमस्कार है ।

१७८. ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमः ।
समस्त देवी देवता गणों को नमस्कार है। गणपतियों को नमस्कार है ।

अन्नं

१७९. अन्नं न निन्द्यात् ! अन्नं न परिचक्षीत ।
अन्न की निन्दा न करे ।

१८०: अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात् !
अन्न ब्रह्माजी हैं, ऐसा जाना ज्ञानी ने ।

१८१. अन्नपूर्णा सदा पूर्णा !
अन्नपूर्णा सदा सब बातों से पूर्ण है । सबकी पूर्ण करती है ।

१८२. अन्नं बहु कुर्वीत तद् व्रतम् !
अन्न बहुत् उब्जाना, वही व्रत है ।

१८३. अन्नमया: प्राणा: !
प्राण और प्राणी अन्नमय हैं ।

१८४. अन्नमयं सोम्य ! मन: !
हे सोम्य ! मन अन्नमय है ।

१८५. यादृशं भुज्यते चान्नं तादृशं आयते मन: !
जैसा अन्न तैसा मन ।

१८६. अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वर: ।
एवं ज्ञात्वा तु यो भुङ्क्ते सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते ।।
अन्न ब्रह्माजी हैं, अन्न का रस विष्णुजी हैं,

अन्न भोक्ता शिवजी हैं। ऐसा जानकर जो अन्न खाता है, वह अन्न के दोष से लिप्त नहीं होता। अन्न खानेवालों को जानना चाहिये।

१८७. अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म-समुद्भवः॥
अन्न से समस्त भूत प्राणी होते हैं, प्रजाहितकारी मेघ से अन्न उत्पन्न होता है। यज्ञ वैदिक कर्म से होते हैं। यज्ञ प्रथम धर्म है।

१८८. बहुधान्य-वसुन्धरा !
धर्तीमाता सदा बहुत धन धान्य से पूर्ण है।

१८९. कृषिवला लोकयुगं जयन्ति !
किसान लोग यह लोक तथा परलोक दोनों लोकों को जीत लेते हैं। जय किसान !

जलम्

१९०. जगदीशः स्थितस्तत्र जलं यत्र विराजते !
जल जठे जगदीश !

१९१. अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् !
विधाता ने आदि में जल की सृष्टि की और जल में सृष्टि का बीज बो दिया, जिससे सारी सृष्टि हुई।

१९२. **जलेन जायते सर्वं जगत् स्थावरजङ्गमम् ।**

सारा जगत् ८४ लाख जीवयोनि स्थावर जङ्गम जल से ही उत्पन्न होते हैं। अतः प्रधान है।

१९३. **जीवानां जीवनं जलम् !**

जल समस्त जीवों का जीवन है। अतः जल का नाम **जीवनं भुवनं वनम्** है।

१९४. **जल-स्थल-व्योमचरा जलन्धयाः ।**

जलचर, स्थलचर, गगनचर सभी जीव जल पीकर ही जिते हैं। अतः जल सबको अनिवार्य है।

१९५. **ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।**

इसलिये जल दूध आदि सभी रस समस्त प्राणियों के लिये यज्ञधर्म से पृथिवी पर, औषधियों में, अन्तरिक्ष में स्वर्गादि सत्य पर्यन्त १४ भुवनों में दशों दिशायें सदा सजल सफल सस्यश्यामल रहें।

पन्थ

१९६. ॐ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सङ्गमेमहि ॥
हम समस्त सम्बद्ध युगल लोकयात्रा उसी प्रकार मिलकर कल्याणकारी करें, जैसे चन्द्र सूर्य रात दिन को दो भागोंमें बाँट कर समस्त लोकों का प्रकाशन पालन पोषण करते हैं। मार्ग में ऐसे मित्र सज्जनों से समागम हो। जो सत् असत् जानते हों, किसी प्रकार की हत्या न करते हों, सर्वदा सर्वथा सर्वत्र सहायता देते हों। ज्ञानी जनों से भेटघाट हो।

ऋग्वेदान्त-संज्ञानसूक्तम्

१९७. ॐ सं समिधुवसे बृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इलस्पदे समिध्यसे स नो बसून्या भर ॥१॥
शक्ति-शाली छौ तिमी हे ईश ! सृष्टि गर्दछौ ।
वेद, गाथा गाउँछन्, धन रत्न वृष्टि गर्दछौ ॥
हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो, बनाते सृष्टिको ।
वेद सब गाते तुम्हे, हैं कीजिये धन वृष्टिको ॥

१९८. सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ।२।

प्रेमले हाम्रो मिलौँ बोलौँ सवै ज्ञानी बनौँ ।
पूज्य पुर्खा झैं सवै कर्तव्यका मानी बनौँ ॥२॥
प्रेम से मिलकर चलो, वोलो सभी ज्ञानी वनो।
पूर्वजों की भांति तुम, कर्तव्य के मानी वनो ॥

१९९. समानो मन्त्रः समितिः समानी समानंमनः सह
चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो
हविषा जुहोमि ॥३॥
हुन् विचार समान सवका चित्त मन सव एक हुन् ।
ज्ञान दिन्छौं यो बराबरभोग्य पाई देख हुन ॥
हों विचार समान सवके, चित्तमन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बरावर, भाग्य पा सब नेक हों ॥

२००. समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासती ।४।
हुन् सवैका मन् तथा सङ्कल्प अविरोधी सदा ।
मन भरेका प्रेमले जसले वढोस् सुख सम्पदा ॥
हों सभी के भाव भी सङ्कल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढे सुख
सम्पदा ॥४॥

२०१. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।

(क) विश्वउद्यानमा फूलोस फेरी आर्य परम्परा ।
वेदका दिव्यज्योतिले उज्याली हुन वसुन्धरा ।।
'सत्यं' वेदकोरूप 'शिवं' हो वेदको प्रभा ।
सुन्दरं वेद सौन्दर्य सच्चिदानन्दको छटा ।।

(ख) सर्वदा सर्वथा सर्वत्र सबै प्राणी सुखी रहुन्, सबै निरोगी रहुन् । सबैले सबैको भलो गरुन्, भलै देखुन् । कुनै कतै कैल्ये पनि एक प्राणी पनि दुःखी न होस् । यो हो हिन्दुहृदयको भावना ।।

(ग) संसारके समस्त चौरासीलाख जातिके चराचर प्राणिगण सर्वदा सर्वथा सर्वत्र सुखी रहें, सभी निरोगी रहें, किसीको कोई भी दुःख देखना न पड़े । सुखी सभी हों, दुःखी एक भी न हो । यह हिन्दु भावना है । हिन्तुधर्म ही मानव धर्म है ।

२०३. ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।।

पितापुत्र, मातापुत्री, पतिपत्नी, सेव्यसेवक, धनीनिर्धन, जिमिदारकिसान, मोहीनलसिंह,

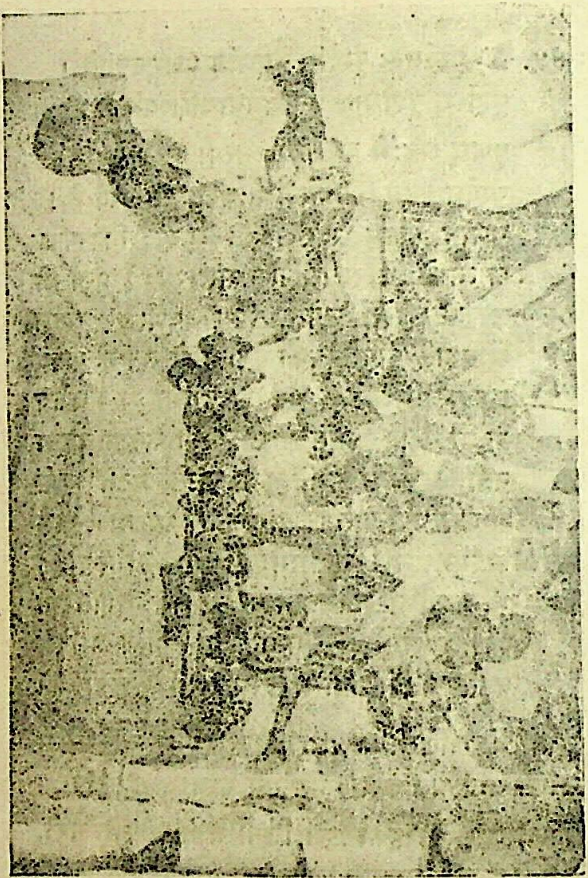
मुखिया-रैति, सानाठुला, बालबृद्ध, राजाप्रजा, गुरुशिष्य, प्रभृति प्रत्येक सम्बद्धयुगलमा सहयोगको सर्वदा प्रयोजन हुनाले हाम्रो उदात्त वैदिक नीति भन्दछ कि:—सहनाववतु......? हामि दुवैले पढे पढायेको विद्या, सिकेको कला, जानेको काम, कमायेको धन, उब्जायेको अन्न, पायेको अधिकारले हामि दुवैको साथै रक्षा गरोस्, साथै सुखभोग देवोस्, साथै वलवान वीर उत्साही वनावोस् र तेजस्वी होस् तेजस्वी वनावोस, हाम्रो आपसमा ईर्ष्या द्वेष वैरभाव कहिल्यैं न होस् ।

हम विश्वब्रह्माण्ड के समस्त देश राष्ट्रजनों की रक्षा सब प्रकार से हमें प्राप्त मानव अधिकार, मानवधर्म अधिकार कर्तव्य शिक्षा दीक्षा विधि विधान साथ-साथ करें, पालन पोषण करें, साथ-साथ करें उत्साही बलवान् बनावें, स्वयं भी उत्साह बल सम्पन्न हों, ओजस्वी तेजस्वी हों, ओजस्वी तेजस्वी बनावें, परन्तु परस्पर कभी किसी का बैर विरोध द्वेष न हो, सदा सब मिलकर चलें, ईश्वर से सबकी प्रार्थना यही है ।

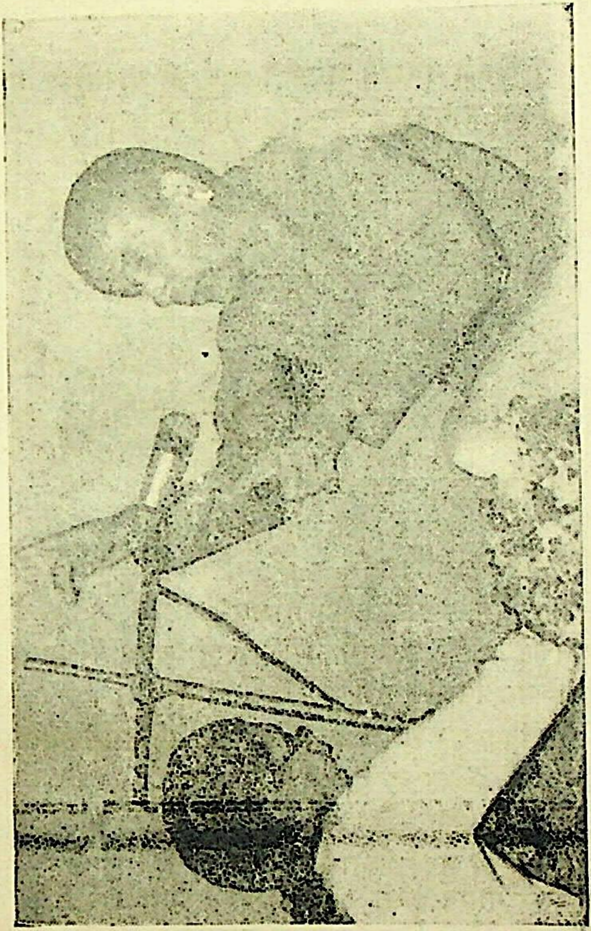
२०५. ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

पूर्णम् अदः = वह ब्रह्म आत्मा पूर्ण है । पूर्णम् इदम् = यह स्थूल जगत् भी पूर्ण है । पूर्णात् पूर्णम् उत् अच्यते = पूर्ण निराकार आत्मासे सारा साकार संसार भी पूर्ण ही उत्कृष्टरूपसे उगता है । पूर्णस्य पूर्णम् आदाय = पूर्ण ब्रह्मकी पूर्णताको लेकर पूर्णम् एव अवशिष्यते = पूर्ण परमात्मा ही अवशेष रहता है । अर्थात् समुद्र कभी कटता वढता नहीं, आकाश आदि भी घटते वढते नहीं शाश्वत सदातन सनातन आत्मा खलु विश्वमूलम् ! (आत्मा ही विश्वका मूल है) भी कभी घटता वढता नहीं । जैसे गणित का पूर्णाङ्क शून्य जोड़ घटा गुणा भाग आदिमें घटता बढता नहीं । यही पूर्णकी पूर्णता है ।

आयों यो कलिको कराल भुमरी छोपेर चोरे तिर,
आँखा बन्द भये कला कृति गये मन्मा छसारै पिर ।
फालौं जाल पराइका हित चिनौं मैत्री जगत्मा गरी,
आपनै संस्कृतिमा डटौं मिलि उठौं आर्यपरीक्षा, छरी ॥



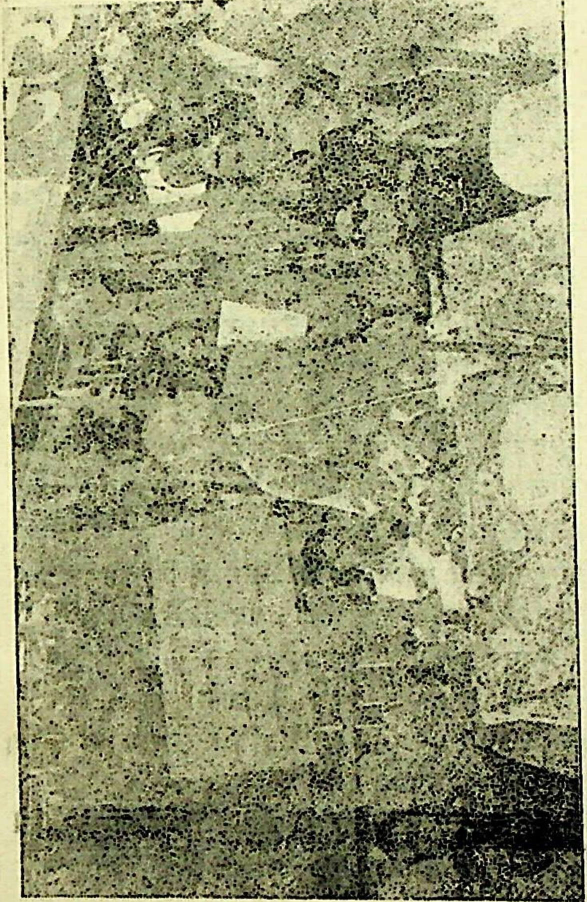
संवत् २०४३ में भद्रेश्वर, जोधपुर चौहदवें कोटि होम के
समय योगी नरहरिनाथः एवं अर्जुनजी, ॐ जी मूलतानजी



तृतयी कोटिहोम (संवत् २०३८), के समय देवघाटधामः नेपालमें प्रवचन देते हुये योगी नरहरिनाथः सरस्वती स्नातक वेदविद्यालङ्कारः

श्री गंगाधर भगवान् शिव की आरती

ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरजाधीश !
शिव जय गौरीनाथ । त्वं मां पालय नित्यं,
त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश
ॐ हर हर हर महादेव ।
कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने
शिव कल्पद्रुम विपिने । गुञ्जति मधुकर
पुञ्जे २ कुञ्जवने गहने । कोकिल कूजति खेलति
हंसावलि ललिता । शिव हंसावलि ललिता ।
रचयति कला कलापं २ नृत्यति मुदसहिता
ॐ हर हर हर महादेव ॥१॥
तस्मिन्ललित सुदेशे शालामणि रचिता
शिव शालामणि रचिता ।
तन्मध्ये हर निकटे तन्मध्ये शिव
निकटे गौरी मुदसहिता । क्रीडां रचयति भूषां
रञ्जित निजमीशं शिव रञ्जित निजमीशं ।
इन्द्रादिक सुर सेवित ब्रह्मादिकमुनि सेवित प्रणमति
ते शीर्षं ॐ हर हर हर महादेव ॥२॥
विबुधवधूर्बहुनृत्यति हृदये मुद सहिता
शिव हृदये मुद सहिता ।
किन्नर गायन कुरुते २ सप्त स्वर सहिता ।
धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते



संवत् २०३८, में देवघाटधाम: नेपालमें तृतीय कोटिहोमके समय हवनकुण्ड बनाते समय प्राप्त खण्डित शिलालेख का परिचय देते हुये, योगी नरहरिनाथ:

शिव मृदंग वादयते । क्वण क्वण ललिता वेणुं २
मधुरं नादयते ॐ हर हर हर महादेव ॥३॥
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलितं
शिव नूपुरमुज्ज्वलितं । चक्रावर्ते भ्रमयति २
कुरुते तां धिकतां । तां तां लुप चुप तालं तालं नाद-
यते शिव डमरू वादयते । अंगुष्ठागुलिनादं २
लास्यकतां कुरुते ॐ हर हर हर महादेव ॥४॥
कपूंर द्युति गौरं पंचानन सहितं शिव पंचानन
सहितं । त्रिनयन शशिधर मौलि २ विषधर कण्ठयुतं ।
सुन्दर जटा कलापं पावकयुत भालं शिव पावकयुत
भालं । डमरु त्रिशूल पिनाकं २ कर धृतनृकपालं
ॐ हर हर हर महादेव ॥५॥
शंख निनादं कृत्वा झल्लरि नादयते शिव
झल्लरि नादयते । नीराजयते ब्रह्मा नीराजयते
विष्णुर्वेद ऋचां पठते । इति मृदुचरण सरोजं
हृदि कमले धृत्वा शिव हृदि कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं शिवलोकयति सुरेशं ईशं अभिनत्वा
ॐ हर हर हर महादेव ॥६॥
रुण्डैरचयति मालां पन्नगमुपवीतं शिव पन्नगमुपवीतं ।
वामविभागे गिरिजा वामविभागे गौरी रूपं अति
ललितं ।
सुन्दर सकल शरीरे मनसिज कृतभस्माभरणं

शिव कृतभस्माभरणम् ।
इति वृषभध्वजरूपं हर शिव शंकर रूपं तापत्रयहरणं
ॐ हर हर हर महादेव ॥७॥
ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा शिव
हृदये इति कृत्वा । रामं जानकि नाथं शम्भो
त्रिजटा नाथं ईशं अभिनत्वा । संगीत मेवं प्रतिदिन
पठनं यः कुरुते शिव रटनं यः कुरुते ।
शिव सायुज्यं गच्छति हर सायुज्य विन्दति भक्त्या
यः शृणुते ॐ हर हर हर महादेव ।
ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश !
शिव जय गौरीनाथ । त्वं मां पालय नित्यं
त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश
ॐ हर हर हर महादेव ॥८॥

卐

प्रत्येक विद्यार्थी पर पूरा ध्यान। कोई भी ना असफल, ना निम्न श्रेणी का। शिक्षक सेवक नहीं, गुरु बने। पेट भरने की हीन मनोवृत्ति की बजाय आदरणीय स्थान गुरु के लिए। भाषा पर प्रत्येक विद्यार्थी आधिपत्य प्राप्त करे और उपयोगी अन्य विद्याएँ भी सीखे। शिक्षा के विभिन्न अंगों एवं पहलुओं हेतु विद्यापीठ विभिन्न विभागों में कार्यरत रहेगा।

सार्वजनिक रजिस्टर्ड ट्रस्ट एवं सार्वजनिक रजिस्टर्ड संस्था द्वारा **योगी नरहरिनाथजी, पीठाधीश**, के निर्देशन में संचालित। संचालन हेतु अक्षय कोष, भूमि-भवन कोष, ग्रन्थागार कोष, उपकरण साधन सामग्री कोष, एवं चालू खर्च कोष, होंगे।

सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस महान् यज्ञ हेतु अपनी ओर से वित्तीय सहायता हेतु अनुदान राशि भद्रेश्वर संस्कृत विद्यापीठ ट्रस्ट, शिव रोड़, रातानाड़, जोधपुर के नाम से भेजने की कृपा करें। "नीति-वक्तव्य एवं योजना

की रूप रेखा" पुस्तिका सहायतार्थ दस रुपए भेज कर प्राप्त कर सकते हैं।

—गोविन्द नारायण

अध्यात्म–वाटिका

प्रकाशक – भद्रेश्वर विद्यापीठ, जोधपुर

मूल्य – आठ रुपया

(तत्व-दर्शन, आत्म-दर्शन, ईश्वर दर्शन की मूलभूत बातों का दिग्दर्शन)

卐

ॐ 卐 गौः श्रीः

आभार

इस पुस्तिकाके प्रकाशनार्थं वित्तीय सहायता हेतु निम्न दाताओं का धन्यवाद प्रस्तुत है :–

1 श्री अर्जुनराम पुनाराम भाटी जी
जोधपुर बीज भण्डार, पावटा, जोधपुर 351

2 श्री जेठमल, लक्ष्मीनारायण भाटीजी
जेठमल एण्ड सन्स, पावटा, जोधपुर 351

3 श्री बन्शीलाल, महेन्द्रसिंह भाटीजी
पावटा, जोधपुर 51

4 श्री मूलतानराम जयकृष्ण भाटीजी 351
श्री महावीर बीज भण्डार, प.वटा, जोधपुर

5 श्री ब्रह्मसिंह सूर्यनारायण भाटीजी 351
आईस क्रीम पारलर, जालौरी द्वार जोधपुर

6 श्री पोकरजी सांखला, पावटा, जोधपुर 51

7 श्री पुषराज, गेहलोतजी, पावटा, जोधपुर 101

8 श्री शङ्करजी साँखला, पावटा, जोधपुर 21

9 सरपंच मदनलालजी सांखला,
चोखा जोधपुर 101

10 श्री प्रेमसिंह जी सोलङ्की, पावटा, जोधपुर 51

11 श्री सन्तोषजी गेहलोत, चोखा, जोधपुर 51

12 श्री जेठाराम परिहार, चोखा, जोधपुर 21

13 श्री आईदानजी देवड़ा, पावटा, जोधपुर 51

14 श्री रामनारायण, परमेश्वरलालजी राठी
चोखा, जोधपुर 101

15 श्री भंवरलाल, प्रेमकृष्णजी सोलङ्की,
चोखा, जोधपुर 51

16 श्री हनुमानजी वूब सिवांची द्वार जोधपुर 101

17 श्री घेवरजी गुजवाला, चोखा, जोधपुर 25

18 श्री भंवरलालजी, चोखा, जोधपुर 11

॥ ॐ नमः शिवाय भद्रेश्वराय ॥

— भद्रेश्वराष्टकम् —

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥
भो भद्रेश्वर ! रामभद्र-महितस्त्वम्भद्रगङ्गाधरो
भद्रङ्कर्तुमिहाक्षभिश्च सकलैः कर्णेभिरेभिर्भृशम् ।
सर्वाङ्गैः सुदृढैः सदा स्तुतिमुखाः कार्यैरपायोज्झितै–
र्यज्ञैर्देवहित यदायुरखिलं सम्प्राप्नुयामो वयम् ॥१॥
भद्रन्तेऽखिलभद्रखण्डकथया भद्रा भजन्ते जना
भद्रेऽस्मिन्नपि भोगिशैलविषये यो भद्रगङ्गोद्गमः ।
हे भद्रेश्वर ! ते शिरोगिरिवरात् पुण्यानि तीर्थानि वै
गौरीकुण्ड–गणेशकुण्ड-गुहयुग्भद्रेशकुण्डानि शम् ॥२॥
सीताकुण्ड-समीपवर्ति बहुलं रामादिकुण्डं तथा
गोकुण्डं तव दृष्टिपात-विमलं श्रीनन्दिकुण्डं शुभम् ।
भद्रं भाति कदम्बखण्डमुभयोः सत्कूलयोर्गाङ्गयोः
शम्याद्या वटपिप्पलादिविटपा हे धूर्जटे ! पाहि माम् ॥३॥
गायत्री-मनु-कोटिहोम-समये योगे च योगे समे
सर्वेषामसुधारिणां पशुपते ! पाता सतां भद्रकृत् ।
भद्रैर्भद्रविचारतो विरचितं श्री भद्रगङ्गातटे
भद्रं मन्दिरपञ्चकं सुरनरैर्भद्रेशपञ्चायनम् ॥४॥
भद्रः पञ्चशिखो विभाति धवलः कैलासशैलो महान्
भद्रो नन्दिवृषो विभाति धवलो माहेश्वरो गोकुले ।
भद्रो वेदगणो विभाति विशदः सद्वैदिके वाङ्मये
भद्रो भासि सभासु भासुरजटो भद्रेश्वरः शङ्करः ॥५॥

योगीन्द्रैः प्रतिपाद्यमानमहिमा वेदोपवेदादिभि-
र्भूया भूतल-नाक-सत्य-सहिताशेषाण्डपिण्डस्थितैः ।
भद्रैर्भक्तगणैः पुराणमुनिभिः पुण्योदयाराधितो
भद्राणां भवनेषु भद्रवृषभो भद्राय भद्रेश्वरः ।।६।।
ज्योतिर्लिङ्गतया यमर्चंति जनो ज्योतिर्विदो वैदिका
यज्ञैरेव यजन्ति यक्षनिवहा यज्ञेश्वरं योगिनः ।
सिद्धा ध्यानसमाधिनाध्वरवुधा विद्याधराः साधकाः
सोऽयं सर्ववरप्रदः शशिधरो भद्रेश्वरो रक्ष माम् ।।७।।
पार्वत्या गणनायकेन शिखिना सिंहेन यो नन्दिना
सेनान्या प्रमथैः सुरासुरगणैः सिद्धर्षिभिर्मानवैः ।
भद्रेशो भगवानिमां मरुधरां रक्षन् सदा सेव्यसे
विश्वात्मापि विशेषभक्तिभवने त्वम्भद्रगङ्गातटे ।।८।।
भद्रेश्वराष्टकमिदं किल कोटिहोमे
भाद्रे शिते सदृषिपञ्चमिकातिथौ यत् ।
शाके दिगीभखनिधीन्दुमिते हि कुर्वे
योगी स्वयं नरहरिः सुजनाः पठन्ति ।।९।।
शमीगुग्गुलु प्लक्षवृक्षैः करीरैरनेकौषधीकन्दमन्दारवृन्दैः ।
वटैः पिप्पलैर्निम्बजम्बूपलाशैः स्नुहीबबुंरैः पीलुभिःशेलुभिश्च।।१०।।
कदम्बद्रुमैर्वृत्तपुष्पैःसुगन्धैर्भ्रमद्भृङ्गझङ्कारसोङ्कारनादैः ।
सदा भद्रगङ्गतटस्थैर्विनम्रैः शिवः सेवितो भाति भद्रेश्वरोऽयम् ।११।

अभयदीप, सोजती गेट, जोधपुर । फोन : 28569